

**Strictly Confidential: (For Internal and Restricted use only)**  
**Senior School Certificate Examination July 2019**  
**Marking Scheme –ECONOMICS (030)**  
**(PAPER CODE –58/1/2) SET 2**

**General Instructions: -**

1. You are aware that evaluation is the most important process in the actual and correct assessment of the candidates. A small mistake in evaluation may lead to serious problems which may affect the future of the candidates, education system and teaching profession. To avoid mistakes, it is requested that before starting evaluation, you must read and understand the spot evaluation guidelines carefully. **Evaluation is a 10-12 days mission for all of us. Hence, it is necessary that you put in your best efforts in this process.**
2. Evaluation is to be done as per instructions provided in the Marking Scheme. It should not be done according to one's own interpretation or any other consideration. Marking Scheme should be strictly adhered to and religiously followed. **However, while evaluating, answers which are based on latest information or knowledge and/or are innovative, they may be assessed for their correctness otherwise and marks be awarded to them.**
3. The Head-Examiner must go through the first five answer books evaluated by each evaluator on the first day, to ensure that evaluation has been carried out as per the instructions given in the Marking Scheme. The remaining answer books meant for evaluation shall be given only after ensuring that there is no significant variation in the marking of individual evaluators.
4. Evaluators will mark (✓) wherever answer is correct. For wrong answer 'X' be marked. Evaluators will not put right kind of mark while evaluating which gives an impression that answer is correct and no marks are awarded. This is most common mistake which evaluators are committing.
5. If a question has parts, please award marks on the right-hand side for each part. Marks awarded for different parts of the question should then be totaled up and written in the left-hand margin and encircled. This may be followed strictly.
6. If a question does not have any parts, marks must be awarded in the left hand margin and encircled. This may also be followed strictly.
7. If a student has attempted an extra question, answer of the question deserving more marks should be retained and the other answer scored out.
8. No marks to be deducted for the cumulative effect of an error. It should be penalized only once.
9. A full scale of marks 0-80 has to be used. Please do not hesitate to award full marks if the answer deserves it.
10. Every examiner has to necessarily do evaluation work for full working hours i.e. 8 hours every day and evaluate 20 / 25 answer books per day.
11. Ensure that you do not make the following common types of errors committed by the Examiner in the past:-
  - Leaving answer or part thereof unassessed in an answer book.
  - Giving more marks for an answer than assigned to it.
  - Wrong transfer of marks from the inside pages of the answer book to the title page.
  - Wrong question wise totaling on the title page.
  - Wrong totaling of marks of the two columns on the title page.
  - Wrong grand total.
  - Marks in words and figures not tallying.
  - Wrong transfer of marks from the answer book to online award list.
  - Answers marked as correct, but marks not awarded. (Ensure that the right tick mark is correctly and clearly indicated. It should merely be a line. Same is with the X for incorrect answer.)
  - Half or a part of answer marked correct and the rest as wrong, but no marks awarded.
12. While evaluating the answer books if the answer is found to be totally incorrect, it should be marked as (X) and awarded zero (0) Marks.
13. Any unassessed portion, non-carrying over of marks to the title page, or totaling error detected by the candidate shall damage the prestige of all the personnel engaged in the evaluation work as also of the Board. Hence, in order to uphold the prestige of all concerned, it is again reiterated that the instructions be followed meticulously and judiciously.
14. The Examiners should acquaint themselves with the guidelines given in the Guidelines for spot Evaluation before starting the actual evaluation.
15. Every Examiner shall also ensure that all the answers are evaluated, marks carried over to the title page, correctly totaled and written in figures and words.
16. The Board permits candidates to obtain photocopy of the Answer Book on request in an RTI application and also separately as a part of the re-evaluation process on payment of the processing charges.

	खंड-अ (व्यष्टि अर्थशास्त्र)	
प्रश्न संख्या	अपेक्षित उत्तर/ मूल बिंदू	अंक
1	यूटिल में	1
2	<p>माँग वक्र में बायीं ओर खिसकाव:</p> <p>(i) प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में कमी</p> <p>(ii) पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि</p> <p>(iii) उपभोक्ता की आय में कमी (सामान्य वस्तु की स्थिति में)</p> <p>(iv) उपभोक्ता की आय में वृद्धि (निम्न कोटि वस्तु की स्थिति में)</p> <p>(v) उपभोक्ता की प्राथमिकता में प्रतिकूल परिवर्तन</p> <p>(vi) जनसंख्या के आकार में कमी (कोई एक मान्य कारण)</p> <p>अथवा</p> <p>माँग की कीमत लोच वस्तु की कीमत में परिवर्तन के कारण इसकी माँग की अनुक्रियात्मकता की माप है।</p>	1
3	<p><math>M = P_1 X_1 + P_2 X_2</math></p> <p>या</p> <p>वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से कुल उपयोगिता में होने वाली वृद्धि, सीमांत उपयोगिता कहलाती है।</p>	1 1
4	अवसर लागत	1
5	X वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए Y वस्तु की समान इकाइयों का त्याग किया जाता है अतः सीमांत प्रतिस्थापन दर स्थिर रहती है जिसके कारण उत्पादन संभावना वक्र का आकार नीचे की ओर ढालू एक सीधी रेखा होता है।	3
6	<p>वस्तु की अधिक इकाइयों का उत्पादन होने पर औसत कुल लागत (AFC) वक्र लगातार गिरता है किंतु किसी अक्ष को नहीं छूता है। कुल स्थिर लागत को बढ़ती हुए उत्पादन इकाइयों से भाग करने पर घटती हुई औसत स्थिर लागत प्राप्त होती है तथा औसत स्थिर लागत (AFC) वक्र आयाताकार अतिपरवलय (Rectangular Hyperbola) आकार का होता है।</p> <p>अथवा</p>	3

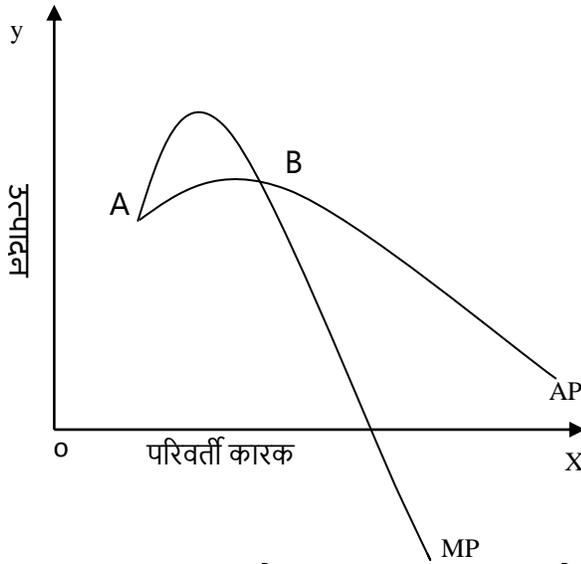
	<p>औसत परिवर्ती लागत (AVC) वक्र 'U' आकार का होता है। परिवर्ती अनुपात के नियम के लागू होने के कारण, आरंभ में औसत परिवर्ती लागत (AVC) वक्र, स्थिर तथा परिवर्ती कारकों के कुशल उपयोग के साथ साधन के बढ़ते प्रतिफल के कारण घटता है। औसत परिवर्ती लागत वक्र अपने न्यूनतम बिंदु पर पहुँचने के पश्चात साधन के घटते प्रतिफल के कारण उत्पादन के बढ़ने के साथ बढ़ता है।</p>																					
7	<p>(क) दिया गया कथन असत्य है। उपभोक्ता की आय के बढ़ने पर वस्तु की माँग बढ़ सकती है या घट सकती है। यह वस्तु की प्रकृति पर निर्भर करता है कि वस्तु सामान्य है या निम्न कोटि है। उपभोक्ता की आय बढ़ने पर, सामान्य वस्तु की माँग बढ़ती है जबकि निम्नकोटी वस्तु की माँग घटती है।</p> <p>(ख) यह कथन गलत है। इस स्थिति में माँग वक्र बायीं से दाईं ओर ढालू वक्र होगा।</p> <p>अथवा</p> $\text{माँग की कीमत लोच} = \frac{\text{माँग की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$ $= \frac{100\%}{20\%}$ $= 5$ <p>माँग वक्र बायीं से दायीं ओर ढालू आकार का है।</p>	<p>2</p> <p>2</p> <p>1</p> <p>1</p> <p>1</p> <p>1</p>																				
8	<p>दिया गया कथन सही है। पूर्ण प्रतियोगिता में संतुलन कीमत का निर्धारण माँग तथा पूर्ति की बाजार शक्तियों द्वारा किया जाता है। इस संतुलन कीमत को सभी फर्मों द्वारा स्वीकार किया जाता क्योंकि फर्म का उत्पादन बाजार में नगण्य होता है तथा वह बाजार कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती है। पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत स्वीकारक होती हैं तथा उद्योग कीमत निर्धारक होता है।</p> <p>(पूर्ण उत्तर के एक साथ अंक दिए जाए)</p>	4																				
9	<table border="1"> <thead> <tr> <th>उत्पादन की बिक्री (इकाइयों में)</th> <th>कुल संप्राप्ति (₹ में)</th> <th>औसत संप्राप्ति (₹ में)</th> <th>सीमांत संप्राप्ति (₹ में)</th> </tr> </thead> <tbody> <tr> <td>1</td> <td>20</td> <td>20</td> <td>20</td> </tr> <tr> <td>2</td> <td>30</td> <td>15</td> <td>10</td> </tr> <tr> <td>3</td> <td>36</td> <td>12</td> <td>6</td> </tr> <tr> <td>4</td> <td>40</td> <td>10</td> <td>4</td> </tr> </tbody> </table> <p>अथवा</p>	उत्पादन की बिक्री (इकाइयों में)	कुल संप्राप्ति (₹ में)	औसत संप्राप्ति (₹ में)	सीमांत संप्राप्ति (₹ में)	1	20	20	20	2	30	15	10	3	36	12	6	4	40	10	4	<p><math>\frac{1}{2} \times 8 =</math></p> <p>4</p>
उत्पादन की बिक्री (इकाइयों में)	कुल संप्राप्ति (₹ में)	औसत संप्राप्ति (₹ में)	सीमांत संप्राप्ति (₹ में)																			
1	20	20	20																			
2	30	15	10																			
3	36	12	6																			
4	40	10	4																			

अनुसूची :

परिवर्ती कारक की इकाइयों (श्रम)	सीमांत उत्पाद (इकाइयों में)		औसत उत्पाद (इकाइयों में)
1	10	=	10
2	20	>	15
3	15	=	15
4	7	<	13
5	0	<	10.4
6	-4	<	8

( कोई अन्य संबंधित अनुसूची व्याख्या सहित )

- जब,  $MP > AP$  है तब औसत उत्पाद (AP) बढ़ता है।  
( दूसरी इकाई पर )
- जब,  $MP = AP$  है तब औसत उत्पाद (AP) स्थिर तथा अधिकतम है।  
( तीसरी इकाई पर )
- जब,  $MP < AP$  है तब औसत उत्पाद (AP) घटता है।  
( चौथी से छठी इकाई तक )



- जब,  $MP > AP$ ; औसत उत्पाद (AP) बढ़ता है. (बिन्दू A से B तक)
- जब  $MP = AP$  ; औसत उत्पाद स्थिर तथा अधिकतम है (बिन्दू B पर)
- जब तक  $MP < AP$  ; औसत उत्पाद AP घटता है। (बिन्दू B के पश्चात)

<p>10</p>	<p>दो वस्तुओं की स्थिति में उपभोक्ता संतुलन होगा जब :</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>• <math>\frac{\text{वस्तु A की MU}}{\text{वस्तु A की कीमत}} = \frac{\text{वस्तु B की MU}}{\text{वस्तु B की कीमत}}</math></li> <li>• MU लगातार गिरती है जब उपभोग बढ़ता है</li> </ul> <p>यदि वस्तु B की कीमत बढ़ती है तो वस्तु A के उपभोग से मिलने प्रति रुपये सीमांत उपयोगिता वस्तु B से मिलने वाली प्रति रुपये सीमांत उपयोगिता से अधिक हो जाएगी। इससे ऐसी स्थिति बन जाएगी जहां:</p> $\frac{\text{वस्तु A की सीमांत उपयोगिता}}{\text{वस्तु A की कीमत}} > \frac{\text{वस्तु B की सीमांत उपयोगिता}}{\text{वस्तु B की कीमत}}$ <p>यह उपभोक्ता को अपना व्यय वस्तु B से वस्तु A पर पुनर्आबंटन करने को प्रेरित करेगा। जिसके परिणामस्वरूप, वस्तु A से मिलने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है जबकि वस्तु B के उपभोग से मिलने वाली सीमांत उपयोगिता बढ़ती जाती है। अंत में, यह प्रक्रिया तब तक चलती है जब तक उपभोक्ता संतुलन की अवस्था</p> $\frac{\text{वस्तु A की सीमांत उपयोगिता}}{\text{वस्तु A की कीमत}} = \frac{\text{वस्तु B की सीमांत उपयोगिता}}{\text{वस्तु B की कीमत}}$ <p>पर ना पहुँच जाए। (पूर्ण उत्तर के एक साथ अंक दिए जाएं) अथवा</p> <p>अनधिमान वक्र तटस्थता वक्र की दो विशेषताएँ :</p> <p>अनधिमान वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होता है: यह घटती प्रतिस्थापन दर के कारण होता है। X वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए, उपभोक्ता Y वस्तु की मात्रा को घटती दर से त्यागने को तैयार होता है। यह घटती सीमांत उपयोगिता के नियम के लागू होने के कारण होता है।</p> <p>अनधिमान वक्र बायीं से दायीं ओर ढालू होता है: जब एक उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक इकाइयों का उपभोग करता है तब उसे समान संतुष्टि स्तर पर बने रहने के लिए दूसरी वस्तु की कुछ इकाइयों का त्याग करना पड़ता है। (कोई अन्य विशेषता, उचित व्याख्या सहित)</p>	<p>6</p> <p>3</p> <p>3</p>
<p>11</p>	<p>एक वस्तु का बाजार संतुलन अवस्था में होता है जब वस्तु की माँग, वस्तु की पूर्ति के बराबर होती है। उत्पादन तकनीक में सुधार के कारण, उत्पादन की सीमांत लागत घटती है जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है। इस से बाजार में अधिपूर्ति की स्थिति उत्पन्न होगी तथा उत्पादकों में उत्पाद की करने के लिए प्रतियोगिता होगी तथा कीमतों में कमी होगी। कीमत कम होने पर माँग में</p>	<p>6</p>

	विस्तार तथा पूर्ति में संकुचन होगा तथा संतुलन निम्न संतुलन पर होगा । इसके परिणाम स्वरूप संतुलन कीमत में कमी होगी तथा संतुलन मात्रा में वृद्धि होगी । ( कोई अन्य संबंधित व्याख्या )					
12	बिक्री मात्रा (इकाईयों में)	कीमत ( रु में )	कुल लागत (रु में)	सीमांत लागत (रु में)	सीमांत संप्राप्ति ( रु में)	1 1
	0	20	10	-	-	
	1	20	50	40	20	2
	2	20	80	30	20	
	3	20	100	20	20	
	4	20	105	5	20	
	5	20	125	20	20	
	6	20	150	25	20	
उत्पादन को संतुलन शर्तें निम्न हैं (i) सीमांत संप्राप्ति (MR) तथा सीमांत लागत (MC) बराबर होनी चाहिए। (ii) संतुलन के बाद सीमांत लागत , सीमांत संप्राप्ति से अधिक होनी चाहिए। उत्पादक उत्पादन की 5 वीं इकाई पर संतुलन में होगा क्योंकि इस इकाई पर दोनों शर्तें संतुष्ट है ।						2
खण्ड-ब समष्टि अर्थशास्त्र						
13	क) विश्व बैंक द्वारा दिए गए ऋण (घ) कर प्राप्ति (दोनों में से किसी एक को अंक दिया जाए।)					1
14	क) वाणिज्यिक बैंकों द्वारा अल्पावधि ऋणों					1
15	राजस्व घाटे से अभिप्राय सरकार की राजस्व प्राप्ति पर राजस्व व्यय की अधिकता से है।					1
16	भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर अथवा मुद्रा गुणांक = $\frac{1}{\text{वैधानिक आरक्षित अनुपात}}$					1 1

<p>17</p>	<p>यह कथन असत्य है। जब प्रत्याशित समग्र माँग, प्रत्याशित समग्र पूर्ति से कम होती है, तब माल सूची के अनभिप्रेत संचय की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इससे उत्पादक के माल सूची में वृद्धि, अतः इस स्थिति को सुधारने के लिए अर्थव्यवस्था में समग्र माँग को बढ़ाना पड़ेगा।</p> <p style="text-align: center;">अथवा</p> <p>(APC) औसत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य एक (1) से अधिक हो सकता है क्योंकि उपभोग का मूल्य आय से अधिक हो सकता है, जब स्वायत्त उपभोग आय से अधिक के कारण।</p>	<p>3</p> <p>3</p>
<p>18</p>	<p>(क) दिया गया कथन गलत है, क्योंकि यथार्त निवेश में स्थिर तथा मालसूचि दोनों निवेश सम्मिलित होते हैं।</p> <p>(ख) दिया गया कथन सही है, क्योंकि यह आय में परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोग में परिवर्तन को दर्शाता है।</p> $MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$	<p>1 ½</p> <p>½</p> <p>½</p> <p>½</p>
<p>19</p>	<p>वैधानिक आरक्षित अनुपात (LRR), केंद्रीय बैंक द्वारा निर्धारित वह न्यूनतम जमा अनुपात है जो एक वाणिज्यिक बैंकों को अनिवार्य रूप से आरक्षित रखना होता है। साख सृजन वैधानिक आरक्षित अनुपात से ऋणात्मक रूप से संबंधित होती है।</p> <p>उदहारण के लिए - माना LRR 0.20 है तथा आरंभिक जमा ₹ 1000</p> $\text{कुल साख सृजन} = \frac{1}{LRR} \times \text{आरंभिक जमायें}$ $= \frac{1}{0.20} \times 1000 = ₹ 5000$ <p>अब माना यदि LRR 0.50 है तथा आरंभिक जमाये ₹ 1000 है, तब</p> $\text{कुल साख सृजन} = \frac{1}{LRR} \times \text{आरंभिक जमायें}$ $= \frac{1}{0.50} \times 1000 = ₹ 2000$ <p>अतः वैधानिक आरक्षित अनुपात (LRR) में कोई वृद्धि, वाणिज्यिक बैंको की साख सृजन क्षमता को कम करती है।</p> <p style="text-align: center;">( कोई अन्य संबंधित उदहारण भी मूल्यांकित किया जाए )</p> <p style="text-align: center;">अथवा</p> <p>बैंको का बैंक : बैंको के बैंक के रूप में, केंद्रीय बैंक, वाणिज्यिक बैंको के नगद कोष के आधिक्य को जमा करता है। यह वाणिज्यिक बैंको को आवश्यकता पड़ने पर ऋण प्रदान करता है। केंद्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंको को अनेक प्रकार की नियमित बैंकिंग सुविधाये भी प्रदान करता है। यह बैंकिंग प्रणाली के नियमक तथा निरीक्षक के कार्य भी करता है। (कोई अन्य संबंधित व्यख्या )</p>	<p>4</p> <p>4</p>

20	<p>दिया गया कथन सत्य है। संसाधन का पुनः आवंटन से अभिप्राय संसाधनों को एक उपयोग से दूसरे उपयोग में लगाया जाता है। लाभ अधिकतम (फर्मों द्वारा) तथा समाज कल्याण (सरकारों द्वारा) के लक्ष्यों के बीच संतुलन को ध्यान में रखकर सरकार संसाधनों का पुनः आवंटन करती है। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तु के उत्पादन को कराधान द्वारा हतोत्साहित किया जाता है। इसके विपरीत समाज उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन को आर्थिक सहायता द्वारा प्रेरित किया जाता है। जब यदि निजी क्षेत्र; कुछ विशेष उत्पादन क्रियाओं में पहल नहीं करता तब सरकार इन उत्पादन क्रियाओं को स्वयं नियंत्रित करती है जैसे पानी पूर्ति सफ़ाई आदि। (पूर्ण उत्तर को एक साथ अंक दे।)</p>	4
21	<p>मूल्यहास = (i)-(iv)+(iii)-(ii)  = 300-185+15-100  = ₹ 30 करोड़</p>	<p>1  <math>\frac{1}{2}</math>  1  <math>\frac{1}{2}</math>  <math>\frac{1}{2}</math>  <math>\frac{1}{2}</math></p>
22	<p>(क) स्वायंत लेनदेन वह अंतर्राष्ट्रीय लेन देन होते हैं जो किसी आर्थिक उद्देश्य से किये जाते हैं जैसे – लाभ अधिकतम करना। यह लेन देन देश की भुगतान शेष की स्थिति से स्वतन्त्र होते हैं।  जबकि: समायोजित लेन देन वह अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक लेन देन होते हैं जो भुगतान शेष में अन्य क्रियाओं के कारण किये जाते हैं जैसे –अंतर्राष्ट्रीय ऋण ये लेन देन देश की भुगतान शेष की स्थिति से प्रभावित होते हैं।</p> <p>(ख) (i) विदेशी विनिमय दर : वह दर जिस पर एक देश की करेंसी को दूसरे देश की करेंसी में परिवर्तित किया जाता है।  (ii) विदेशी मुद्रा : घरेलू मुद्रा को छोड़कर अन्य सभी करेंसी, विदेशी मुद्रा कहलाती है।  (iii) मुद्रा का अवमूल्यन : जब सरकार द्वारा घरेलू मुद्रा के मूल्य में विदेशी मुद्रा की अपेक्षा कमी की जाती है।</p>	<p>1 <math>\frac{1}{2}</math>  1 <math>\frac{1}{2}</math>  1  1  1</p>
23	<p>(क) भारत में स्थित ब्रिटिश दूतावास में कार्यरत भारतीय को प्राप्त मजदूरी सकल घरेलू उत्पाद की गणना में सम्मिलित नहीं होगी क्योंकि ब्रिटिश दूतावास भारतीय घरेलू आर्थिक सीमा का भाग नहीं है, यह ब्रिटिश की आर्थिक सीमा का हिस्सा है।  (ख) आर्थिक सहायता, हस्तान्तरण आय है क्योंकि इसके बदले में कोई साधन सेवाएं प्रदान नहीं की गयी है यह सकल घरेलू उत्पाद की गणना करने में सम्मिलित नहीं होगी।  (ग) विदेशों से क्रय की गयी पुरानी मशीनरी सकल घरेलू उत्पाद की</p>	<p>2  2  2</p>

गणना में सम्मिलित नहीं होगी क्योंकि यह आयात है। आयात का मूल्य GDP की गणना करते समय घटा दिया जाता है।

अथवा

जब वर्तमान वर्ष की राष्ट्रीय आय (उत्पाद) की गणना आधार वर्ष की कीमतों पर की जाती है, वह वास्तविक राष्ट्रीय आय कहलाती है। जबकि जब वर्तमान वर्ष की राष्ट्रीय आय (उत्पाद) की गणना वर्तमान वर्ष की कीमतों पर की जाती है, वह मौद्रिक राष्ट्रीय आय कहलाती है।

6

वस्तु	वर्तमान वर्ष की मात्रा (Q <sub>1</sub> )	वर्तमान वर्ष की कीमत (P <sub>1</sub> )	आधार वर्ष की कीमत (P <sub>0</sub> )	वास्तविक आय (P <sub>0</sub> Q <sub>1</sub> )	मौद्रिक आय (P <sub>1</sub> Q <sub>1</sub> )
□	10	20	10	100	200
□	20	30	20	400	600
□	5	50	40	200	250
कुल				700	1050

उपरोक्त उदाहरण में वास्तविकता आय ( $\sum P_0 Q_1$ ) = ₹700 है तथा मौद्रिक आय ( $\sum P_1 Q_1$ ) = ₹ 1050 है।

24  $S = -250 + 0.25 Y$

(क) आय का संतुलन स्तर वह होता है जहां,  $S = I$  होता है।

बचत तथा निवेश का मान रखने पर

$$-250 + 0.25 Y = 2000$$

$$0.25 Y = 2250$$

$$Y = \frac{2250}{0.25}$$

$$Y = ₹ 900 \text{ करोड़}$$

(ख)  $C = c + b(Y)$

$$= 250 + 0.75 (5000)$$

$$= 250 + 3750$$

$$= ₹ 4000 \text{ करोड़}$$

$$AD = C + I$$

$$= 4000 + 2000$$

$$= ₹ 600 \text{ करोड़}$$

6